

Campus भाट

हिन्दुस्तान को बहुत आजादी मिल गई है.....

Eggs के चम्पा से रुबरु होते आवाज़ रिपोर्टर

आपका पूरा नाम ?
चंपा लाल गुप्ता।

आप eggs कब से चला रहे हैं ?
16 साल हो गये।

आप पहले क्या करते थे ?
बाहर एक छोटा सा डेस्ट्रेंट चलाते थे। भरत के कहने पर हमने eggsies खोला। उस समय bachelor था, students से अच्छी जान-पहचान हो गई और हम यहीं बस गये।

इसको आगे बढ़ाने के बारे में क्या सोचा है ?
हम तो चाहते हैं कि काउन्टर बढ़ाएँ menu बढ़ाएँ पर अनुमति मिलना मुश्किल है।

क्या आपके यहाँ दर्ते ऊँची नहीं है ?
हमारी दर्ते ऊँची इसलिए है कि हम व्हालिटी खाना देते हैं। कैंटीन का खाना सस्ता है क्योंकि उनका किराया कम होता है जबकि हमें महीने का 7000 देना पड़ता है। पानी का अलग से देना पड़ता है।

इन सालों में आपने क्या बदलाव देखे हैं ?
जनता बढ़ गयी है। आज कल के लड़के पहले से अच्छे हैं। बिजली बहुत कम करती है आजकल।

कुछ लोग तो आपके यहाँ सिर्फ़ पुराने चोमांटिक गाने चुनने आते हैं। भाई पुराना आदमी हूँ तो पुराने गाने ही अच्छे लगते न।

आपको सबसे अच्छा कौन सा लगता है ?
छूकर मेरे मन को....

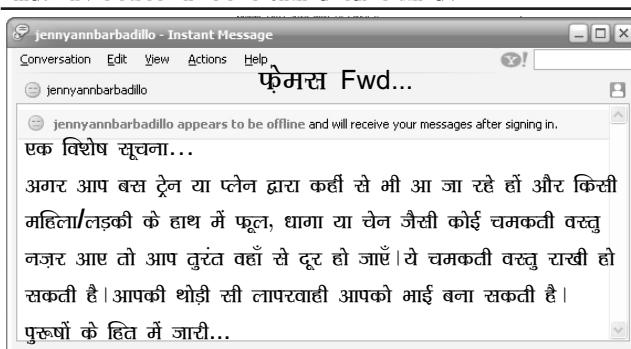
क्या पहले भी यहाँ meetings होती थीं ?
हाँ TDS, SF वाले पहले भी यहीं मिलते थे।

ईंगिंग वैगैरह की कोई प्रोफ़्लॉम हुयी क्या कभी ?
बहुत बार सीनियर जूनियर्स को यहाँ से भेगा देते थे और आने से मना करते थे। कभी कभी ईंगिंग भी होती थी। मैंने खुद कई बार उन्हें रोका।

यहाँ की जनता के बारे में आपका क्या कहना है ?
लोग बहुत decent हैं। हमें इनसे बहुत लगाव हो गया है।

कोई चोक क्या ?
(लंबे अंतराल के बाद) जब Germany, US में बसे पुराने छात्रों के फोन आते हैं तब बहुत खुशी होती है.....

.....और एक लंबी गुफ्तगू... अंत में गुप्ता जी दार्शनिक हो जाते हैं -
“हिन्दुस्तान को बहुत आजादी मिल गई। इतनी आजादी नहीं मिलनी चाहिए थी। जिसको जो मन में आता है वही करता है।”



orkut

Username/Email:
Password:

loading...

जी हाँ !!! orkut पर झांडाना हमारी आदत सी है। friends n fans बढ़ाना हमारा passion है। पर कभी-कभी ये खतरनाक भी हो सकता है। हमारे दोस्त मिस्टर X के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। उनकी तो आदत है - जहाँ देखी नारी वही scrap मारी। कुछ दिन पहले उन्हे orkut के नबीला में नबीला मिली। बात शुरू करनी थी तो पहला scrap कुछ यूं मारा।

X : अपने भाई से बोलते हुए 500 रु वापस दे। साला... बहुत दिनों से लिया हुआ है।

नबीला की pepsi-cigar के साथ फोटो देखकर दूसरा scrap मारा।

X : तुम मस्त लगती हो दालू सुट्टा मारती हो XLRI से हो....

नबीला : मुझे indecent scraps मत भेजो। (गाली)

अब शुरू हुआ छेड़-छाड़ का सिलसिला। X के दोस्तों ने नबीला की scrapbook में बाढ़ ला दी। scrap पर scrap और scrap भी एसे-एसे.....

“गाली चर्चों देती है, अच्छी बात नहीं है, हम भी गाली दे सकते हैं। X ने तो बाकायदा एक community बना दी 'नबीला गाली चर्चों देती है?'। दोस्त तो एक कदम आगे बढ़ गए। नबीला के female friends को scrap करते लगे: “नबीला से बोल गाली मत दे... लड़की के मुँह से गाली अच्छी नहीं लगती। उसकी शादी कैसे होगी?” नबीला तंग आ चुकी थी। उसने आरोप लगाया कि X ने किसी hacker से उसकी profile hack कराई थी। उसने तो जमशेदपुर cyber crime विभाग में शिकायत भी की और वहाँ के DOSA को भी बताने की चोची। आगे क्या हुआ हम बताने लायक नहीं मगर जनाब थोड़े सुधार तो गए हैं।



First sem में ही seniors से funda मिला था कि SF में किसी की भी दाल गल सकती है। हमने बहुत जोर लगाया पर SF हमें कुछ न दे पाया।

वेलेन्टाइन्स डे के दिन इस बार भी हमारी झोली खाली ही थी। शाम के बक्स अपने so called students दोस्तों से राय ली। लगा दिया फोन Hutch Care को। एक बंदे ने फोन उठाया। औपचारिक बात - चीत के बाद मैंने पूछा “आपके बाजू में कोई बंदी है ?”। साहब भी शायद रंगीले थे। एक बंदी को फोन दे दिया। Hello की खनकती आवाज़ गूँज़ी। धड़कते दिल से मैंने कहा 'Happy Valentine's Day'। सन्नाटा...फिर चाशनी में घुली आवाज़ आई 'Thanks'। मेरा दिल और जोर से धड़कने लगा। पूछ बैठा “आप मेरी वेलेन्टाइन बनेंगी ?”। धक्का दिल दे दीजिए। फिर सन्नाटा...।

उसने कहा “आप तो मेरे पीछे ही पड़ गए”। अपुन बोला “क्या कल्लूं दिल है कि मानता न...ही”। फोन कट चुका था। कुछ दिन बाद फोन किया तो पता चला कि उसका transfer हो चुका है। बोले तो मेरी love story की फिर से गाट लग गई मात्र !

पटरी पर जिन्दगी

भारतीय रेत 81551 km का मायाती जात जिसमें उलझते रहते हैं निरीह जीव और बन जाते हैं 'हँसी का पात्र'। इस कटु सच्चाई से हमारे इन ||Tian दोस्त को भी दी-चार होना पड़ा। Midsem के भूत के डर से हमारे दोस्त ने दो लगातार night-outs मारे। Peace मारने के लिए घर जाने की सोची। जाना था चौंकी via जमशेदपुर, ट्रेन थी सुबह 8:30 बजे की। एक दोस्त ने राय दी सुबह 5:30 बजे गाली local से जाने की। जनाब ने तीसरा night-out भी मार दिया और सुबह सुबह स्टेशन पहुँच गए। वहाँ टिकट counter पर लंबी line ने हमारे दोस्त को frust कर दिया। एक typical “Load मत ले look” वाले व्यक्ति ने बताया कि ट्रेन 6:30 बजे की है। जनाब टिकट लेकर platform पर पहुँचे ही थे कि वहाँ एक local आ लगी। उनको बहुत आश्चर्य हुआ ट्रेन के समय से पहले आने पर। नीद की खुमारी ने मति भ्रष्ट कर दी थी। जलाल सो गए उसी ट्रेन की एक खाली सीट पर। नीद खुली तो सोचा TATA आ गया होगा। पर बाजूवाली आन्दी ने बताया—“ऐटा TATA ना जाओ, जदि खड़गार जाबाट आच्छे तो वे ताटा गाली सामनेरे ट्रेन ला धूलन”। सुनते ही जलाल में बिजली समा गई। पलक झपकते पहुँच गए सामने वाली ट्रेन के अंदर। KGP पहुँचते पहुँचते हालत परत। 8:30 बजे चुके थे। साढ़े आठ बाजी लोकत से टाटा जाने की सोची। नीद की खुमारी में announcement समझा न आई। ताटा-ताटी पहुँच गए गलत platform पर और फिर से पकड़ ली गलत ट्रेन। दो घंटे बाद पहुँच गए सांतरागाली। Vendor से मालामाल पड़ा ट्रेन दौड़ा जा रही है। दिमाग का fuse उड़ गया। उस ट्रेन से उतरे और देखा KGP जाने की दिशा में खड़ी थी एक ट्रेन। अब कोई risk नहीं लेना चाहते थे। सोधी ध्रुवांश्चर से जा पूछा, “दाटा KGP जाओगे ?” जैसे रिक्षा कर रहे हीं। जावाब निला-‘नहीं’। तभी एक T.T.E.अवतरित हुआ और देखा KGP जाओगे ?” जैसे तैसे अगली लोकत पकड़कर ज़नाब 2:00 बजे KGP पहुँचे। तब तक उनको अपनी गृह-दशा समझ आ चुकी थी। आखिर मैं अपने हाँल जाना ही मुनासिब समझा।



Technology कार्टून कोना

ये chem dep के होगाक छात्र हैं

